यादवों का दल नया है । इनके मुखिया खेलावन यादव को दस बरस पहले तक लोगों ने भैंस चराते देखा है । दूध-घी की बिक्री से जमाए हुए पैसे की बात जब चारों ओर बुरी तरह फैल गई तो खेलावन को बड़ी चिंता हुई । महीनों तहसीलदार के यहाँ दौड़ते रहे, सर्किल मैनेजर को डाली चढ़ाई, सिपाहियों को दूध-घी पिलाया और अंत में कमला के किनारे पचास बीघे जमीन की बंदोबस्ती हो सकी । अब तो डेढ़ सौ बीघे की जोत है । बड़ा बेटा सकलदीप अररिया बैरगाछी में, नाना के घर पर रहकर, हाईस्कूल में पढ़ता है । खेलावनसिंह यादव को लोग नया मातबर कहते हैं । लेकिन यादव क्षत्रियटोली को अब 'गुअरटोली' कहने की हिम्मत कोई नहीं करता । यादवटोली में बारहो मास शाम को अखाड़ा जमता है । चार बजे दिन से ही शोभन मोची ढोल पीटता रहता है—ढाक ढिन्ना, ढाक ढिन्ना ! ढोल के हर ताल पर यादवटोली के बूढ़े-बच्चे-जवान डंड-बैठक और पहलवानी के पैंतरे सीखते हैं ।

सारे मेरीगंज में दस आदमी पढ़े-लिखे हैं—पढ़े-लिखे का मतलब हुआ अपना दस्तखत करने से लेकर तहसीलदारी करने तक की पढ़ाई । नए पढ़नेवालों की संख्या है पंद्रह ।

गाँव की मुख्य पैदावार है धान, पाट और खेसारी । रब्बी की फसल भी कभी-कभी अच्छी हो जाती है ।

तीन

डिस्टीबोट के मिस्तिरी लोग आए हैं । बालदेव के उत्साह का ठिकाना नहीं है । आफसियरबाबू ने तहसीलदार साहब और रामकिरपालसिंह के सामने ही कहा था—"आप तो देश के सेवक हैं ।" सबों ने सुना था । दुनिया में धन क्या है ? तहसीलदार साहब और सिंघ जी के पास पैसा है, मगर जो इज्जत बालदेव की है, वे कहाँ पाएँगे ? यादवटोली के लोगों ने बालदेव से उसी दिन माफी माँग ली थी, "बालदेव भाई ! ··· हम लोग मूरख ठहरे और तुम गियानी । हम कूप के बेंग* हैं । तुम तो बहुत देश-विदेश घूमे हो, बड़े-बड़े लोगों के साथ रहे हो । हमारा कसूर माफ कर दो ।"

उसी दिन से खेलावनसिंह यादव बालदेव को अपने यहाँ रहने के लिए आग्रह कर रहे हैं, "जात का नाम, जात की इज्जत तो तुम्हीं लोगों के हाथ में है । तुम कोई

* मेंढ़क ।

पराए हो ? तुम्हारी मौसी मेरी चाची होगी । हम-तुम भाई-भाई ठहरे ।"

खेलावन की डेरावाली खुद आकर बालदेव की बुढ़िया मौसी से कह गई, "घर आँगन सब आपका ही है । जिस घर में एक बूढ़ी नहीं, उस घर का भी कोई ठिकाना रहता है ! मैं अकेली क्या करूँ, दूध-घी देखूँ कि गोबर-गुहाल ?"

बालदेव की बुढ़िया मौसी की दुनिया ही बदल गई । कल तक घर-घर घूमकर कुटाई-पिसाई करती फिरती थी और आज गाँव की मालकिन आकर उसे सारे घर की मालकिन बना गई !

मिस्तिरी लोग आए हैं । बालदेव गाँव के टोले में घूमता रहा । "डिस्टीबोट से मिस्तिरी जी लोग आए हैं । कल से काम शुरू हो जाना चाहिए । ··· मलेरिया बोखार मच्छड़ काटने से होता है । मगर कुनैन खाने से, जितना भी मच्छड़ काटे, कुछ नहीं होगा ।" ततमाटोली (तंत्रिमाक्षत्रियटोली) में मँहगूदास के घूर के पास, बालदेव की बातों को लोग बड़े अचरज से सुन रहे हैं । आँगन की औरतें भी घूँघट काढ़े, टट्टी के पास खड़ी होकर सुन रही हैं, "अब रात-भर गोइँठा जलाकर धुआँ करने का झंझट नहीं, काटे जितना मच्छड़ !"

पोलियाटोली, तंत्रिमा-छत्रीटोली, यदुवंशी छत्रीटोली, गहलोत छत्रीटोली, कुर्म छत्रीटोली, अमात्य ब्राह्मणटोली, धनुकधारी छत्रीटोली, कुशवाहा छत्रीटोली, और रैदासटोली के लोगों ने बचन दिया, "सात दिन तक कोई काम नहीं करेंगे । मालिक लोगों से कहिए—हल-फाल, कोड़-कमान बंद रखें । करना ही क्या है ? एक इसपिताल का घर, एक डागडरबाबू का घर, एक भनसाघर[1] और एक घर फालतू । सात दिनों में ही सब काम रैट हो जाएगा ।"

धनुकधारीटोली के तनुकलाल ने एक सवाल पैदा कर दिया, "लेकिन हलफाल काम-काज बंद करने से मालिक लोग मजूरी तो नहीं देंगे ! एक-दो दिन की बात रहे तो किसी तरह खेपा भी जा सकता है । सात दिन तक बिना मजूरी के ? यह जरा मुश्किल मालूम होता है ! ··· ततमा और दुसाधटोली के लोगों की बात जाने दीजिए । उनकी औरतें हैं, सुबह से दोपहरिया तक कमला में कादो-पानी हिड़कर एक-दो सेर गैंची मछली निकाल लाएँगी । चार सेर धान का हिस्सा लग जाएगा । बाबू लोगों के पुआल के टालो[2] के पास धरती खरोंचकर, चूहे के माँदों को कोड़कर भी कुछ धान जमा कर लेंगी । नहीं तो कोठी के जंगल से खमरआलू उखाड़ लाएँगी । रौतहट हाट में कटिहार मिल के कुल्ली लोग चार आने सेर खमरआलू हाथोंहाथ उठा लेते हैं । लेकिन, और लोगों के लिए तो बड़ा मुश्किल है ।"

बालदेव ने निराश होकर पूछा, "अब क्या किया जाए ?"

तनुकलाल के पास समस्या का समाधान पहले से ही मौजूद था । बोला, "एक

1. रसोईघर । 2. घास की ढेरी ।

उपाय है, यदि मालिक लोग आधे दिन की मजूरी दे दें तो काम चल जाए ।"

तनुकलाल के इस प्रस्ताव पर विचार करता हुआ बालदेव मालिकटोला की ओर चला । विश्वनाथबाबू तो मान लेंगे, सिंघ जी के बारे में कुछ कहना मुश्किल है । सिपैहियाटोली का बिरजूसिंघ कल कह रहा था, "सिंघ जी इसपिताल में कोई मदद नहीं करेंगे । कहते थे, इसपिताल का मालिक- मक्तियार है विश्वनाथ और बलदेवा !"

ब्राह्मणटोली से तो कुछ उम्मीद करनी ही बेकार है । जिस दिन से अस्पताल होने की बात उन लोगों ने सुनी है, दिन-रात डाक्टर और अंग्रेजी दवा के खिलाफ तरह-तरह की कहानियाँ सुनाते फिर रहे हैं । जोतखी जी का विश्वास है कि डाक्टर लोग ही रोग फैलाते हैं, सुई भोंककर देह में जहर दे देते हैं, आदमी हमेशा के लिए कमजोर हो जाता है; हैजा के समय कूपों में दवा डाल देते हैं, गाँव-का-गाँव हैजा से समाप्त हो जाता है । कालाबुखार का नाम पहले लोगों ने कभी सुना था ? पूरब मुलुक कामरू कमिच्छा हासाम[1] से कालाबुखारवालों का लहू शीशी में बंद करके यही लोग ले आए थे । आजकल घर-घर काला बुखार फैल गया है । ··· इसके अलावा, बिलैती दवा में गाय का खून मिला रहता है ।

भगमान भगत की दुकान के पास ही विश्वनाथबाबू से भेंट हो गई । तनुकलाल के प्रस्ताव को सुनते ही विश्वनाथबाबू चिढ़ गए । "··· धानुकटोली का तनुकलाल ? अपने को बड़ा काबिल समझता है । हर बात में वह एक-न-एक 'लेकिन' जरूर लगाएगा । तुम भी तो बालदेव पूरे 'बेमभोलानाथ' हो । उससे पूछा नहीं कि अस्पताल से सिर्फ मालिक लोगों की भलाई होगी क्या ?"

भगमान भगत हमेशा सुपारी चबाता रहता है । बोलने के समय ऐसा लगता है कि वह बात को भी चबा रहा है, "अरे ! ई तो दस आदमी के काम बा, जे-बा-से एकरा में सब के मिल के मतत[2] करे के चाहीं । का हो सीप्रसाद ?"

भगत की दुकान पर यों भी हमेशा चार-पाँच आदमी बैठे रहते हैं । विश्वनाथबाबू की आवाज सुनकर दो-चार व्यक्ति और जमा हो गए । बूढ़े सुमरितदास को लोग लबड़ा समझते हैं । मगर वह समय पर पते की बात बता जाता है । आते ही बोला, "अरे तहसीलदार, आप समझे नहीं । तनुकलाल अपने मन से नहीं बोला है, इसमें कनकशन है । जरा इधर एकांत में आइए तो बतावें ।" तहसीलदार और सुमरितदास भगत की दुकान से जरा दूर जाकर बतियाने लगे । दुकान में बैठे हुए किसी ने कुढ़कर कहा, "बूढ़ा लुच्चा इसी को कहते हैं—हर बात में एकांती !"

भगत ने आँख टीपकर मना कर दिया—जोर से मत बोलो, बालदेव है ।

सुमरितदास से प्रायबिट करने के बाद तहसीलदार का मिजाज बदल गया ।

1. आसाम । 2. मदद ।

आकर बोले, "अच्छा तो बालदेव, तुम जाकर ततमाटोली और पोलियाटोलेवालों से कहो, मैंने पचास रुपया माफ कर दिया । उस दिन आफसियरबाबू को जो डाली दी गई थी सो तो तुम्हारे ही सामने की बात है । बिरंची भी था । ··· अब जरा सिपैहियाटोला जाओ, देखो वे लोग क्या कहते हैं । कोई कुछ करे, हमारा जो धरम है हम करेंगे ?"

बालदेव जब सिंघजी के दरवाजे पर पहुँचा तो सिंघजी घोड़े पर सवार हो चुके थे । शायद कटिहार जा रहे हैं । जात्रा का टोकना अच्छा नहीं, इसलिए बादलेव चुप ही रहा । सिंघजी के दरवाजे पर पाँच-सात आदमी बैठे हुए थे । किसी ने बालदेव को बैठने के लिए भी नहीं कहा । बालदेव ने सबों को एक ही साथ 'जाय हिंद' कहा । शिवशक्करसिंघ के बेटे हरगौरी ने बादलेव से पूछा, "कहिए बालदेव लीडर, क्या समाचार है ?"

"आप लोगों की किरपा से सब अच्छा है । बाबूसाहेब, आप स्कूल से कब आए ?" बालदेव के पास पड़े हुए खाली मोढ़े पर बैठते हुए पूछा ।

"सुना कि आपकी लीडरी खूब चल रही है ।"

"बाबूसाहेब, गरीब आदमी भी भला लीडर होता है ! हम तो आप लोगों का सेवक है ।"

"आप तो लीडर ही हो गए । तो आजकल कांग्रेस आफिस का चौका-बर्तन कौन करता है ।" हरगौरी अचानक उबल पड़ा । "अरे भाई, सभी काशी चले जाओगे ? पत्तल चाटने के लिए भी तो कुछ लोग रह जाओ । जेल क्या गए, पंडित जमाहिरलाल हो गए । कांग्रेस आफिस में भोलटियरी करते थे, अब अंधों में काना बनकर यहाँ लीडरी छाँटने आया है । स्वयंसेवक न घोड़ा का दुम !"

"बाबूसाहेब, मुँह खराब क्यों करते हैं ? आप विदमान हैं और हम जाहिल । हमसे जो कसूर हुआ है कहिए ।"

"उठ जाओ दरवाजे पर से । बेईमान कहीं के ! डिक्ट्रिक्ट बोर्ड से अस्पताल की मंजूरी हुई है, रुपया मिला है । सब चुपचाप मारकर अब बेगार खोज रहे हैं । चोर सब ! ··· उठ जाओ दरवाजे पर से !"

हरगौरी तमतमाकर बालदेव को धक्का देने के लिए उठा । बैठे हुए लोगों ने 'हाँ-हाँ' करके हरगौरी को पकड़ लिया । बालदेव चुपचाप बैठा रहा, "मारिए, यदि मारने से ही आपका गुस्सा ठंडा हो तो मारिए ।"

हल्ला-गुल्ला सुनकर भीड़ जम गई । हरगौरी का लड़कपन किसी को पसंद नहीं । शिवशक्करसिंघ भी सुनकर दुखित हुए, "लीडरी करे या भोलटियरी, तुमको किस बात की चिढ़ लगी ? तुम्हारा क्या बिगाड़ा था ··· अच्छा बालदेव, बुरा मत मानना । हँसी-दिल्लगी में उड़ा दो । ··· छोटा भाई है ।"

"शिवशक्कर मौसा, बाबूसाहब गाली-गलौज करके मारने चले । मगर हम

कोई लाजमान[1] बात मुँह से निकालते हैं ? पूछिए सबों से । महतमाजी कहिन हैं ···"

नीम के पेड़ का कागा कायँ-कायँ कर उठा ।

हरगौरी गुस्से से थर-थर काँप रहा है । ··· ये लोग भी अजीब हैं । एक घंटा पहले बालदेव की टोकरी-भर शिकायत कर रहे थे, लीडरी सटकाने की बात कह रहे थे, और अभी उसका बाप भी बालदेव की खुशामद कर रहा था ! ग्वाला होकर लीडरी ··· ?

"गुअरटोलीवाले हँसेरी[2] लेकर आ रहे हैं," एक लड़का दौड़ता-हाँफता आकर खबर दे गया । ऐं ! ··· गाँव के उत्तर में शोरगुल हो रहा है । खूँटे में बँधे हुए बैलों ने चौकन्ने होकर कान खड़े किए । गाँव के बाहर चरती हुई बकरियाँ दौड़ती-मिमियाती हुई गाँव में भागी आ रही हैं । कुत्ते भूँकने लगे । ··· बात क्या हुई ?

"अरे बेटा रे ! गौरी बेटा रे ! ··· आँगन में आ जा बेटा रे ! गुअरटोली का कलिया पगला गया है !" हरगौरी की माँ छाती पीटती और रोती हुई आई, और हरगौरी को घसीटकर आँगन में ले गई । बच्चे रोने लगे ।

"अरे, बात क्या हुई ?"

"भाला निकालो छत्तर !"

"हमारी गंगाजीवाली लाठी कहाँ है ?"

"तीर निकाल रे !"

"अरे बात क्या है ? हँसेरी क्यों ··· ?"

कौन किसका जवाब देता है ! किसे फुरसत है ! सारे गाँव में कुहराम मचा हुआ है । हरगौरी की माँ अब शिवशक्करसिंघ को आँगन में बुला रही है । चिल्ला रही है, "गुअरटोली का रौदी बूढ़ा आया है । ··· गुअरटोली में बूढ़े-बच्चे खौल रहे हैं कि हरगौरी ने बालदेव को जूते से मारा है । कुकुरू का बेटा कलचरना काली किरिया[3] खाया है—हरगौरी का खून पीएँगे । ··· आँगन में आ जाओ गौरी के बाबू !"

"ओ !" बालदेव दौड़ा, "आप लोग अकुलाइए मत । हम देखते हैं । नासमझ लोग हैं, समझा देते हैं ।"

"एक बार बोलिए प्रेम से ··· महाबीरजी की ··· जै !"

"जै ! जाय ··· जाय !"

बालदेव को देखते ही यादव सेना खुशी से जयजयकार कर उठी । "बोलिए एक बार प्रेम से ··· गन्ही महतमा की ··· जै ! जाय ··· जाय । ऐ ! शांती ! शांती ! चुप रहो, बालदेव जी क्या कहते हैं, सुनो ! ···"

"पियारे भाइयो, आप लोग जो अंडोलन किए हैं, वह अच्छा नहीं । अपना कान देखे बिना कौआ के पीछे दौड़ना अच्छा नहीं । आप ही सोचिए, क्या यह समझदार आदमी का काम है ! ··· आप लोग हिंसावाद करने जा रहे थे । इसके लिए हमको अनसन करना होगा । भारथमाता का, गाँधी जी का यह रास्ता नहीं ··· ।"

सचमुच गियानी आदमी हैं बालदेव जी । अंडोलन, अनसन, और ··· और क्या ? ··· हिंसाबात ! किसी ने समझा ! गियानी की बोली समझना सभी के बूते की बात नहीं । ···

"अनसन क्या करेंगे ?"

"अंट-संट ?"

कलिया कहता था—उपास करेंगे बालदेव जी । कलिया को बुलाकर बालदेव जी कहते थे—कालीचरन, तुम बहुत बहादुर लौजमान हो । लेकिन जोस में होस भी रखना चाहिए । हम खुस हैं, लेकिन उपास करेंगे ।

"सचमुच यदि उस दिन बालदेव जी ठीक समय पर नहीं आ जाते तो कालीचरन इस पार चाहे उस पार कर देता । ··· अरे, हरगौरिया ! कल का छौंड़ा इस्कूल में चार अच्छर पढ़ क्या लिया है लाटसाहेब हो गया है ।"

"अरे, पढ़ता क्या है, दाढ़ी-मोच हो गया है और अपना सकलदीप से दो लास* नीचे पढ़ता है । एकदम फेलियर है । इस साल भी फैल हो गया है । उसका बाप मास्टर को घूस देने गया था । मास्टर गुस्साकर बोला—भागो, नहीं तो तुमको भी फैल कर देंगे ।"

"अरे पढ़ेगा क्या ! सुनते हैं कि लालबाग मेला में लाल पढ़ना में पास हो गया है ।"

बात बनाने में दुलरिया से कोई जीत नहीं सकता । "लाल पढ़ना नहीं समझे ? ··· हा-हा ··· हा-हा ··· खी-खी ! लाल पढ़ना !"

—ढाक-ढिन्ना, ढाक-ढिन्ना !

"चलो रे, अखाड़ा का ढोल बोल रहा है ।"

चार

सतगुरु हो ! सतगुरु हो !

महंथ साहेब सदा ब्रह्म बेला में उठते हैं । "हो रामदास । आसन त्यागो

1. अपशब्द । 2. बलवा करनेवाला दल । 3. कसम ।

* क्लास ।